‘धार्मिक कृत्यों का अध्यात्मशास्त्रीय आधार’ : श्राद्ध – खण्ड १

श्राद्ध का महत्त्व एवं अध्यात्मशास्त्रीय विवेचन

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापना के उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

एवं पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

卐 सनातन के ग्रन्थों की भारत की भाषाओं के अनुसार संख्या 卐

मराठी ३४५, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९९, हिन्दी १९६, गुजराती ६८, तेलुगु ५४, तमिल ४४, बांग्ला ३०, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

अक्टूबर २०२४ तक ३६६ ग्रन्थों की १३ भाषाओं में ९७ लाख ७२ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थ के संकलनकर्ताओं का परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजी के आध्यात्मिक शोधकार्य का संक्षिप्त परिचय

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था' की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्ति के लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्ग की निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधना से २०.९.२०२४ तक १२८ साधकों को सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४३ साधक सन्तत्व की दिशा में अग्रसर हैं ।

३. आचारधर्मपालन, देवता, साधना, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयों पर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात' के संस्थापक-सम्पादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र (ईश्वरीय राज्य) की स्थापना की उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र' की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन तथा उनका मार्गदर्शन !

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी का साधकों को आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९६

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन की ग्रन्थ-रचना की सेवा करने के साथ ही राष्ट्रजागृति एवं धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्री (सनातन पंचांग, धर्मशिक्षा फलक इत्यादि) के लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र एवं धर्म सम्बन्धी नियतकालिक 'सनातन प्रभात' में प्रबोधनपरक लेखन भी करते हैं ।

अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र (मुद्दे) '*' चिह्न से दर्शाए हैं ।)

अध्याय १. श्राद्धविधि का परिचय १३

१ अ. 'श्राद्ध' शब्द के सन्दर्भ में जानकारी १३

१ आ. श्राद्धविधि का इतिहास १३

अध्याय २. श्राद्ध करने का महत्त्व, लाभ एवं परिणाम १४

२ अ. श्राद्ध का उद्देश्य १४

२ आ. श्राद्ध का महत्त्व एवं आवश्यकता १४

२ इ. श्राद्ध से सम्भावित लाभ २१

२ ई. श्राद्ध का परिणाम २२

२ उ. श्राद्धकर्ता के सात गोत्रांतर्गत गति पानेवाले एक सौ एक कुल २३

२ ऊ. श्राद्ध के देवता २४

अध्याय ३. श्राद्ध के प्रकार एवं उनका विवेचन २५

३ अ. श्राद्ध के प्रकार एवं उनके लाभ २५

३ आ. नारायणबलि, नागबलि एवं त्रिपिण्डी श्राद्ध ४३

अध्याय ४. श्राद्ध की परिभाषा, तर्पण एवं पितृतर्पण ५१

४ अ. श्राद्ध की परिभाषा ५१

४ आ. तर्पण एवं पितृतर्पण ५३

अध्याय ५. श्राद्ध कौन, कब एवं कहां करें ? ५७

५ अ. श्राद्ध कौन करें ? ५७

५ आ. श्राद्ध कब करें ? ६०

५ इ. श्राद्ध कहां करें ? ७३

अध्याय ६. श्राद्ध की तैयारी ७७

अध्याय ७. श्राद्धविधि सम्बन्धी आलोचना एवं उनका खण्डन ९४

आचारधर्म का महत्त्व अंकित करनेवाले सनातन के ग्रन्थ !

स्नानपूर्व आचारों का अध्यात्मशास्त्रीय आधार

- ब्राह्ममुहूर्त पर उठने का क्या महत्त्व है ?
- उषाकाल में सोते क्यों नहीं रहना चाहिए ?
- ब्रश से नहीं, उंगली से दंतधावन उचित क्यों ?
- झाडू कमर से झुककर लगाना उचित क्यों ?

स्नान से लेकर सांझ तक के आचारों का अध्यात्मशास्त्रीय आधार

- स्नान करते समय पीढे पर पालथी मारकर क्यों बैठें ?
- स्नान के समय श्लोकपाठ / नामजप क्यों करें ?
- उकडूं बैठकर कपडे क्यों न धोएं ?
- संध्यासमय घर में दीप जलाने का शास्त्र क्या है ?

भूमिका

वर्तमान वैज्ञानिक युग की युवा पीढी के मन में ऐसी अनुचित धारणा उभरती है, 'श्राद्ध' अर्थात 'अशास्त्रीय एवं अवास्तविक कर्मकाण्ड का आडम्बर' । धर्मशिक्षा का अभाव, अध्यात्म के विषय में अनास्था, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, धर्मविरोधी संगठनों द्वारा हिन्दू धर्म की प्रथा-परम्पराओं पर निरन्तर द्वेषपूर्ण प्रहार इत्यादि का यह परिणाम है । श्राद्ध के विषय में निम्नानुसार विचार भी समाज में दृष्टिगोचर होते हैं । पूजा-पाठ एवं श्राद्ध पक्ष पर विश्वास न करनेवाले अथवा समाजकार्य को ही सर्वश्रेष्ठ बतानेवाले कहते हैं, 'पितरों के लिए श्राद्ध न कर, गरीबों को अन्नदान करेंगे अथवा किसी पाठशाला की सहायता करेंगे !' ऐसा अनेक लोग करते भी हैं ! ऐसा करना यह कहने समान है, 'किसी रोगी पर शस्त्रक्रिया न करते हुए हम गरीबों को अन्नदान करेंगे अथवा पाठशालाओं की सहायता करेंगे ।' श्राद्धान्तर्गत मन्त्रोच्चारण में पितरों को गति प्रदान करने की सूक्ष्म शक्ति समाई हुई है; इसलिए श्राद्धविधि द्वारा पितरों को मुक्ति मिलना सम्भव होता है, इसलिए उपरोक्त विधान हास्यास्पद सिद्ध होते हैं । इस ग्रन्थ का प्रयोजन है कि मुख्यत: उपरोक्त विचारधारावाले व्यक्तियों की आंखों से अज्ञान एवं अन्धविश्वास का पटल दूर हो और उन्हें हिन्दू धर्म के पवित्र संस्कार 'श्राद्ध' के प्रति सकारात्मक एवं अध्यात्मशास्त्रीय दृष्टि का लाभ हो ।

भारतीय संस्कृति का कथन है कि जिस प्रकार माता-पिता एवं निकटवर्तीय परिजनों की जीवितावस्था में हम उनकी सेवा धर्मपालन समझकर करते हैं, उसी प्रकार उनकी मृत्यु के पश्चात भी उनके प्रति कुछ कर्तव्य होते हैं । इन कर्तव्यों की पूर्ति एवं उनके द्वारा पितृऋण चुकाने का अवसर श्राद्धकर्म से मिलता है । बाल्यकाल में फूल समान हमें सम्भालनेवाले हमारे माता-पिता की मृत्युपरान्त की यात्रा सुखमय और कष्टरहित हो, उन्हें सद्गति मिले, इस हेतु श्राद्धविधि आवश्यक है । श्राद्ध न करने पर पितरों की अतृप्त इच्छाओं के कारण, ऐसे वासनायुक्त पितर अनिष्ट शक्तियों के पाश में फंसकर उनके दास बन जाते हैं । अनिष्ट

शक्तियों द्वारा पितरों का अनुचित लाभ उठाए जाने की एवं परिजनों को कष्ट दिए जाने की आशंका अधिक रहती है । श्राद्धविधि के कारण पितरों के कष्टों से मुक्त होकर हमारा जीवन भी सुसह्य एवं सुखमय बनता है और विशिष्ट फलप्राप्ति भी होती है । ऐसे विभिन्न पहलुओं द्वारा श्राद्ध का महत्त्व एवं लाभ इस ग्रन्थ में स्पष्ट किए हैं ।

उसीके साथ नान्दी, महालय, भरणी, त्रिपिण्डी जैसे श्राद्ध के प्रकार, श्राद्ध कौन करे ?, श्राद्ध कब और कहां करें ?, श्राद्ध के लिए उचित ब्राह्मण न मिलने पर क्या करें ?, श्राद्ध के भोजन के आवश्यक पदार्थ कौन से हैं ?, श्राद्ध-कर्ता एवं श्राद्ध-भोक्ता के लिए विधिनिषेध कौन से हैं ?, ऐसी अनेक उपयुक्त जानकारी इस ग्रन्थ में दी गई है । श्राद्ध करने पर पितरों को गति कैसे मिलती है ?, पिण्ड को काकस्पर्श का शास्त्र इत्यादि सर्व सामान्यजनों की शंकाओं का समाधान भी इस ग्रन्थ में किया गया है ।

श्री गुरुचरणों में प्रार्थना है कि इस ग्रन्थ के अध्ययन से हमारे महान ऋषि-मुनियों द्वारा भेंट की गई श्राद्धरूपी अनमोल संस्कृतिधन की विरासत को संजोए रखने की सद्‌बुद्धि सबको मिले, साथ ही श्राद्धविधि श्रद्धापूर्वक कर हम अपने पूर्वजों की एवं अपनी उन्नति साध्य कर पाएं । – **संकलनकर्ता**

टिप्पणी – 'मर्त्यलोक' शब्द का अर्थ : भूलोक एवं मर्त्यलोक (मृत्युलोक, पृथ्वीलोक) समानार्थी शब्द हैं, ऐसा प्रचलित है । सनातन के साधकों को प्राप्त ईश्वरीय ज्ञान से मिली जानकारी के अनुसार 'मर्त्यलोक' मृत्युलोक एवं भुवर्लोक के मध्य का एक स्थान है । वह स्थान पृथ्वी की कक्षा में होने के कारण पृथ्वी का ही एक भाग है, तथापि वह प्रत्यक्ष पृथ्वी से अलग है । जिन लिंगदेहों को गति न मिलने से वे पृथ्वी छोडते हैं; परन्तु भुवर्लोक में प्रवेश नहीं कर पाते, वे भूलोक एवं भुवर्लोक के मध्य अटक जाते हैं । ऐसे स्थान को इस ग्रन्थ में 'मर्त्यलोक' सम्बोधित किया गया है ।' – **संकलनकर्ता**